Course - B.A, Education Hons,part-3
Paper- 7th, Educational Thought and practice & Adult Education
Prepared by -- Dr Meena Kumari
Topic--Educational Philosophy of Rousseau

----------+--+--+--+++--+++++++(+(-------++----+-+++++

रूसो का शिक्षा दर्शन

(1)प्रस्तावना :---

रूसो अपने समय के एक महान प्रकृतिवादी दार्शनिक थे !उन्होंने 16 वर्ष की आयु में ही बहुत सारे किताबों का अध्ययन कर डाला था !उनके अनुसार प्रत्येक वस्तु जैसी कि वह प्रकृति के क हाथ से आती तो अच्छी होती है ,परंतु मनुष्य के हाथों में आकर प्रत्येक वस्तु का पतन हो जाता है। वे एक महान युग प्रवर्तक शिक्षा सुधारक, राजनीतिक विचारक ,समाज सुधारक तथा आधुनिक प्रकृतिवाद के जनक थे! रूसो के प्रकृतिवादी दृष्टिकोण पर उनके जीवन की गहरी छाप थी !शिक्षा के संबंध में लिखने वाले वे महान तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रकृति वादी दार्शनिक थे ! उससे अधिक प्रकृतिवाद पर किसी ने नहीं लिखा।

(2) रूसो के दार्शनिक विचारधारा

: रूसो ने प्रकृति को सभी गुणों से संपन्न माना है। उनके अनुसार बालक को शिक्षा के लिए सामाजिक नहीं बल्कि प्राकृतिक वातावरण का होना आवश्यक है। इसलिए रूसो ने "प्रकृति की ओर लौटो ,"तथा "प्रकृति का अनुसरण करो" जैसे नारे दिए! रूसो का प्रकृतिवादी दृष्टिकोण एमिल की प्रारंभिक पंक्तियों में स्पष्ट होता है। रूस ने लिखा है कि प्रत्येक वस्तु प्रकृति के हाथों में अपने सर्वोत्तम रूप में रहती है और मनुष्य के हाथों में वह विकृत हो जाती है! प्रकृति की तरफ लौटने का उनका अर्थ था अभिमान का त्याग करना, दूसरे के साथ तुलना ना करना तथा अपने कार्यों में ध्यान देना। उनके अनुसार हम लोग बहुत सी काल्पनिक इच्छाओं को त्याग कर केवल आवश्यकता की वस्तु तक सीमित रख सकते हैं। इसलिए हम माया सागर को त्याग कर अपने आप को पुन: ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं और विनम्र होकर अपने आत्मा को प्राप्त कर सकते हैं अर्थात हम प्रकृति के करीब है। रूसो के अनुसार जीवन का अधिक अनुभव रखने वाला व्यक्ति वह नहीं है जो अधिक दिनों तक जीता है, परंतु वह व्यक्ति है जिसने पूर्णता से जीवन का अनुभव किया है। जीवन व्यतीत करना से बढ़कर जीवन की पूर्णता को अधिक महत्वपूर्ण माना है। रूसो बालक की मौलिक और संभावित शक्तियों के स्वतंत्र एवं सरलता पूर्वक विकास करने में विश्वास रखते थे। रूसो ने बच्चों की शिक्षा में प्रकृतिवादी दृष्टिकोण का उपयोग निम्नलिखित तरीके से करने का सुझाव दिए थे :_----

**बच्चों को प्राकृतिक रूप में विकसित करना !
** बच्चों को बच्चे के रूप में ही समझना!

** बालकों को उसकी प्रकृति ,योग्यता ,क्षमता ,आवश्यकता रुचि तथा मनोवृत्तियों के अनुसार शिक्षा देना चाहिए!
** प्रकृति के संपर्क द्वारा शिक्षा प्रदान करना
** बालक के विकास के अनुसार उचित समय पर उचित शिक्षा देना!
** बालक के विभिन्न अंगों एवं शक्तियों का क्रमिक एवं स्वभाविक विकास करना !
**तीन चीजों यथा प्रकृति ,मानव तथा पदार्थ के समन्वय पर जोर देना।

(3) रूसो के शैक्षिक विचार

रूसो की शैक्षिक विचारधारा आदर्शवाद के विरूद्ध थी। उनके अनुसार सच्ची शिक्षा वही है जो बालक की मूल प्रवृत्ति का विकास करें ।रूसो ने शिक्षा को एक प्रकार का बाल बागवानी कहा है ।वह कहते थे कि पौधा पोषण से और मनुष्य शहै।अंगो तथा क्षमताओं के मुक्त विकास की भी बात करते हैं।रूसो के अनुसार सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति के अंदर से प्रस्फुटित होती है तथा अंतर्निहित शक्तियों की अभिव्यक्ति करती है । बच्चों के प्राकृतिक रूप से विकास पर जोर दिया है ।वह कहते हैं कि बच्चों का विकास उसके मूल स्वरूप तथा स्वतंत्र रूप में किया जाना चाहिए ।रूसो के अनुसार शिक्षा प्रकृति, मानव तथा पदार्थ के समन्वय पर आधारित है। प्रकृति को महत्व देने से रूसो मानव तथा पदार्थ की अवहेलना नहीं करता ।बच्चों की शिक्षा में मनुष्य ,पदार्थ तथा प्रकृति क के समन्वय पर आधारित होना चाहिए ।इनके प्रभाव से उसका आंतरिक विकास संभव होता है। उसकी शिक्षा से जुड़े विचारों को अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि वे चाहते हैं कि बच्चों का विकास प्रकृति की गोद में हो ना कि किसी खास विद्यालय में और इसका प्रभाव उनके शैक्षिक प्रक्रिया के उद्देश्य, पाठ्यक्रम तथा अनुशासन संबंधी विचारों पर भी देखने को मिलता है जो निम्न प्रकार से है:------

१) शिक्षा का उद्देश्य - रूसो के अनुसार जीवन का उद्देश्य आनंद प्राप्ति है। मनुष्य को मनुष्य बनाना ही इनके शिक्षा का उद्देश्य है। रूसो के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बच्चों के अंगों तथा शक्तियों का स्वभाविक विकास करना है।

इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य बालों को सही अर्थों में मनुष्य बनाना है। बालक के विकास की विभिन्न अवस्थाओं के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य अलग-अलग
है।रूसो मानव जीवन को 4 अवस्थाओं मे बांटे हैं जो निमनवत है

>> शैशवावस्था--- शारीरिक स्वास्थ्य बालक के मानसिक स्वास्थ्य का आधार होता है। यह काल जन्म से 5 वर्ष तक माना
गया है। इस अवस्था में शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारीरिक विकास होना चाहिए।

>>बाल्यावस्था-- यह 5 से 12 वर्ष तक की अवस्था है ।इस अवस्था में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक की ज्ञानेंद्रियों का विकास करना है!

>>किशोरावस्था -व्यवस्था 12 से 15 वर्ष तक मानी गई है! इस आयु में किशोर व्यक्तित्व का विकास ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है किशोर को अन्य प्रकार का उपयोगी और महत्वपूर्ण ज्ञान दिया जाना चाहिए, जिससे वह स्वयं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके।

>>युवावस्था - यह काल 15 से 20 वर्ष तक माना गया है ।रूसो के अनुसार इस समय बच्चों के शरीर, उनकी इंद्रियों तथा उसकी बुद्धि का निर्माण का समय है जिससे अपनी संवेग पर नियंत्रण कर सके। इस काल में शिक्षा का उद्देश्य नैतिकता तथा संवेग का विकास होना बतलाया गया है।

इस प्रकार रूसो के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बच्चों की सवारी क्रिया में सहायता प्रदान करके उनकी विभिन्न शक्तियों का विकास करना है रूसो बाल्यकाल में पुस्तक ज्ञान का विरोधी है।

२) शैक्षिक पाठ्यचर्या --- रूसो ने शिक्षा के 3 मूल स्रोत माना है प्रकृति ,मनुष्य तथा वस्तु ।इसलिए उन्होंने इन विंदुओ को पाठ्यक्रमों में शामिल किए थे। वे शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विकास के विभिन्न स्तरों के लिए अलग अलग पाठ्यक्रमों कि रूपरेखा निम्नवत है----

1) शैशवास्था के लिए पाठ्यक्रम --- रूसो ने इस अवस्था को शारीरिक विकास की अवस्था माना है ।वह शरीर को बलिष्ट बनाने वाली प्रक्रियाए खेलकूद, घूमना फिरना आदि को महत्वपूर्ण स्थान दिए थे ।वह बातचीत के माध्यम के रूप में मातृभाषा पर जोर दिए।

२) बाल्यावस्था --- रूसो इस अवस्था में पुस्तक को पाठ्यक्रम में शामिल नहीं किए। वे बच्चों को 12 वर्ष तक पुस्तक से दूर रहने की सलाह दिए। वह बच्चों को अनुभव के आधार पर सीखने पर बल दिए । इंद्रियों का विकास के द्वारा मानसिक विकास की बातें की थी। उनके अनुसार बाल्यावस्था में खेलने कूदने ,उठने, बैठने देखने ,सुनने आदि की स्वतंत्रता दिए जाने से बालक बहुत प्रकार के अनुभवों को सीखता है और अनेक क्रियाएं सीख कर फिर अपने जीवन में उपयोग करता है।

३) लड़कपन के लिए पाठ्यक्रम --- इस समय के पाठ्यक्रम के निर्धारण में उपयोगिता को आधार बनाया गया है ।इसमें कला ,भूगोल ,दस्तकारी ,प्राकृतिक विज्ञान तथा उन क्रियाओं का स्थान दिया गया जो बालक के जिज्ञासा को शांत कर सके।

४) किशोरावस्था-- इस अवस्था के दौरान बच्चों के शरीर और इंद्रियों के पुष्ट हो जाने के बाद प्राकृतिक विज्ञान ,भाषा, गणित , लकड़ी का काम, संगीत ,चित्रकला ,सामाजिक जीवन और व्यवसाय संबंधी शिक्षा के पाठ्यक्रम में निर्धारित किया जाए ।किशोरावस्था में शिक्षा पाठ्यपुस्तक पर नहीं बल्कि क्रियाओं और व्यवहार पर आधारित होनी चाहिए ।इसमें किशोरों को परिश्रम ,शिक्षा और अध्ययन के पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए।

५) युवावस्था--- इस अवस्था में पाठ्यक्रम के अंतर्गत नैतिक और धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल देना चाहिए ।उनके अनुसार बालकों को नैतिक शिक्षा एवं धार्मिक शिक्षा दूसरे के प्रति व्यवहार के द्वारा मिलती है ।इसी प्रकार धार्मिक शिक्षा भी धार्मिक उपदेश से नहीं बल्कि ऐतिहासिक, पौराणिक कथाओं तथा धार्मिक कथाओं से मिल सकता है। इसको सुनने के बाद बच्चों में नैतिक और धार्मिक शिक्षा मिलती है।

६) नारी शिक्षा---- रूसो ने नारी शिक्षा की वकालत नहीं की है ।वह कहते थे कि नारी शिक्षा का कार्य सिर्फ यह है कि वह पुरुषों के सुख साधनों में वृद्धि करें ।उनकी दृष्टि में नारी शिक्षा के पाठ्यक्रम में गृह शिक्षा ,संगीत ,नृत्य ,सिलाई ,कढ़ाई ,बुनाई, धर्म नैतिक शिक्षा तथा आज्ञाकारी बनने की शिक्षा देनी चाहिए।

(3) शिक्षण विधि

रूसो के अनुसार शब्दों तथा पुस्तक द्वारा प्राप्त ज्ञान की तुलना में स्वयं अनुभव द्वारा सीखा हुआ ज्ञान अधिक स्थाई होता है। रूसो द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत आज वर्तमान युग में पूर्ण रूपेण प्रासंगिक है ।उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को आज आधुनिक शिक्षण शास्त्र में शामिल किया गया है। यह सिद्धांत क्रियात्मक विधियों पर आधारित है ।क्रियात्मक विधियों पर उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत निम्न वत है

***"करके सीखना !**
***"निरीक्षण द्वारा सीखना !**
***"अन्वेषण द्वारा सीखना !**
****स्वनुभव द्वारा सीखना ।**
****प्रयोग द्वारा सीखना!**

(4) अनुशासन

रूसो का अनुशासन संबंधी दृष्टिकोण आदर्शवादियों के दर्शन से पूर्णतया भिन्न है। वह बच्चों की स्वतंत्रता के समर्थक थे तथा बच्चों पर किसी प्रकार के बाहरी नियंत्रण से इनकार करते थे। उन्हें प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन के सिद्धांत पर ज्यादा भरोसा था ।इस प्रकार रूपों के अनुसार अनुशासन के लिए दो सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया । प्रथम स्वतंत्रता का सिद्धांत तथा दूसरा प्राकृतिक परिणाम द्वारा अनुशासन का सिद्धांत ।पहले सिद्धांत के अनुसार अनुसार मुक्ततात्मक अनुशासन की स्थापना की गई जिसके अनुसार बच्चों को स्वयं पर छोड़ देना चाहिए ताकि वह अपने अनुभव स के अनुसार अपने व्यवहार को बदल सके। दूसरे सिद्धांत के अनुसार वह बच्चों को कभी भी दंड नहीं देना चाहते हैं बल्कि प्रकृति के नियमों के विरुद्ध अगर कोई कार्य करेगा तो प्रकृति उसे दंड देगी ।अतः उनके अनुसार बच्चे के कार्य ही उसे स्वयं अनुशासित कर देंगे क्योंकि कार्य उसे यह बताएंगे कि उन्हें कौन सा कार्य करना चाहिए और कौन सा नहीं ।

(5) अध्यापक छात्र संबंध

--- बच्चों को माता-पिता और विद्यालय से अलग प्राकृतिक परिवेश में छोड़ देना चाहिए। शिक्षक का कार्य केवल उसकी देखभाल करना है। प्राकृतिक वातावरण में वह स्वयं अपनी शक्तियों का विकास करेगा ।यदि विद्यालय होनतो उसे यथासंभव सामाजिक परिवेश पर जोर देते हुए प्राकृतिक परिवेश उत्पन्न किया जाना चाहिए ,जिससे कि बालक का स्वभाविक विकास हो सके।

रूसो का शैक्षिक दर्शन वर्तमान में भी प्रासंगिक है ।उनके शिक्षा दर्शन का प्रभाव किसी ना किसी रूप में आज भी विद्यमान है ।उनकी क्रियात्मक विधियों का प्रभाव आधुनिक मान्यता तथा शिक्षा संबंधी विचारों पर भी गहरा है। आज क्रियात्मक विधियों पर जोर दिया जा रहा है। प्रकृतिवाद के सभी दार्शनिकों में इनका स्थान सर्वोत्तम है।